फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 225 मार्च 2007

किसानों को ज्यादा कर्ज देने वाली भारत सरकार की नीति दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत की रफ्तार बढाने के लिये सामाजिक हत्या वाली नीतियों का हिस्सा है।

कुछ छोटी-छोटी बातें

कई तरह की पेट की बीमारियों, विभिन्न प्रकार के उदर रोगों की भरमार है। "पापी पेट" का जिक्र और बहुत कुछ को व्यक्त करने के लिये किया जाता है परन्तु यहाँ हम स्वयं को उदर रोगों तक ही सीमित रखेंगे। व्यापक और सामान्य बन चुकी पेट की बीमारियों के उपचार के लिये किन्हीं गोलियों, घोलों, व्यायामों, प्रार्थनाओं-प्रवचनों का भी यहाँ जिक्र नहीं होगा हालाँकि पेट दर्द से राहत-छुटकारे के लिये इनका बहुत-ही ज्यादा प्रयोग हो रहा है। "मर्ज बढता गया ज्यों-ज्यों दवा की" का सन्दर्भ अन्यथा परन्तु पेट की बीमारियों पर यह अक्षरशः लागू होता है। ऐसे में आइये उदर रोगों को कुछ हट कर देखने का प्रयास करें।

– भोजन का पेट से सीधा-सरल-सहज रिश्ता है। तो, टेढापन कहाँ-कहाँ से उपजता है?

- भोजन का अभाव। भोजन खरीदना पड़ता है और पैसे नहीं हैं तो भूखे रहो। दुनियाँ में ऐसे लोगों की सँख्या बढती जा रही है जिनके पास पैसे नहीं हैं, कम पैसे हैं। पर्याप्त पौष्टिक भोजन का नहीं मिलना उदर रोगों का, इनके बढने का एक बड़ा कारण है।
- जल और मछली जैसा ही पेट और पानी का रिश्ता है। कल-कारखानों का विस्तार, नगरों का बढना, कृषि में रसायनों का प्रयोग सम्पूर्ण पृथ्वी पर जल के प्रदूषण को बढा रहा है। संसार में प्रदूषित पानी पीने वाले मनुष्य तीव्र गति से बढ रहे हैं। दुनियाँ में आज शायद ही कोई हो जो प्रदूषित जल पीने से बचा है। जल-जनित पेट की बीमारियों ने महामारी का रूप ले लिया है।
- निश्चित समय पर भोजन। आधे घण्टे से कम समय में निगलना। खानपान निर्धारित अन्तराल पर। भूख-प्यास लगी होना अथवा नहीं लगी होना का बेमानी होते जाना। विश्व-भर से इच्छा पर भोजन का लोप-विलोप हो रहा है। फैक्ट्री-दफ्तर-स्कूल द्वारा शौच का समय फिक्स! विद्यालय का एक अर्थ बचपन में ही पेट के रोगों के बीज बोने वाला स्थल भी है। फैक्ट्री-दफ्तर-स्कूल का विस्तार, समय-सारणी उर्फ टाइम टेबल की बढती जकड़ उदर रोगों को बढाना लिये है।
- नींद का अभाव। रात की नींद का अभाव। शिफ्टों में ड्युटी और शिफ्ट परिवर्तन के संग भोजन-शौच का समय बदलना। कार्यस्थल पर लगातार खड़े रहना अथवा लगातार बैठे रहना। उत्पादन व वितरण का अधिकाधिक विश्वव्यापी आधार पर होना दिन और रात के भेद मिटा कर भोजन-पाचन के हमारे जैविक वृत को तहस-नहस कर रहा है। इसलिये रात को जागना थोपने वाली बिजली को पेट की बीमारियों की एक जननी कह सकते हैं। और, इलेक्ट्रोनिक्स-कम्प्युटर-सैटेलाइट उदर रोगों के रक्तबीज हैं, पौराणिक रक्तबीज के क्लोन हैं।

– तन और मन का निकट का रिश्ता है। और, आज जैसे समाज में निकट जन का प्रिय जन होना नहीं रहा है वैसे ही मन में तन के प्रति कड़वाहट बढ रही है। मन द्वारा तन को हाँकना, मन द्वारा मन को मारना, तन द्वारा मन को नकारना हर व्यक्ति की नियति-सी बन गये हैं। मन की पीड़ा पेट को पेट नहीं रहने देती, मन की पीड़ा उदर रोगों की एक पूरी जमात लिये है। पैसे वाले भी मन की पीड़ा जनित पेट की बीमारियों से मुक्त नहीं हैं। संसार में सर्वत्र व सार्विक हैं मन से जुड़े उदर रोग:

- खुशी का, मस्ती का अकाल पूरी पाचन-क्रिया को बिगाड़ने के लिये काफी है। पूरी दुनियाँ में भड़ास निकालना खुशी-मस्ती का स्थान ले रहा है। दिखावटी खुशी-मस्ती जटिल उदर रोग उत्पन्न करती है।
- वास्तविक प्रेम और आदर को दिखावटी प्रेम व आदर द्वारा प्रतिस्थापित करना। कदम-कदम पर अनादर, अपमान का सामान्य बात बनना। ऐसे में गुस्से का हर व्यक्ति में हर समय उपजना और सामान्यतः गुस्से को दबाना-छिपाना, गुस्से को पी जाना तथा जब-तब गुस्से का विस्फोट पेट के लिये बमों की श्रृँखला समान है।
- इच्छाओं व अनिच्छाओं के अनन्त दमन को वर्तमान की एक चारित्रिकता कह सकते हैं। तनाव हर जगह छाया है और तनाव से भूख ही नहीं लगना अथवा इसके विपरीत ज्यादा खा जाना वाली स्थितियाँ बनती हैं – उदर रोगों के लिये यह दोनों ही उपजाऊ जमीन प्रदत करती हैं।
- अवसाद उर्फ डिप्रेशन...पेट बेचारा क्या करे?

क्या खाते हैं? कैसे खाते हैं? किसके साथ खाते हैं? इन प्रश्नों का भोजन की पौष्टिकता, शरीर की आवश्यकता, मन की इच्छा के साथ रिश्ते कम ही बच हैं। बल्कि, समाज म स्तर दर्शाते डण्डे-डँके इन्हें अधिकाधिक लोगों पर थोप रहे हैं। और, औपचारिकता का बोलबाला पेट का दिवाला निकाल देता है....

रोग में निजी पीड़ा राहत-उपचार को सर्वोपरि बना कर सामान्यतः रोग की जड़ों को ओझल करती है। और, रोगों की जड़ों को छिपाना स्वयं में एक फलता-फूलता व्यवसाय है। ऐसे में बीमारियों की सम्भावनायें कम करने वाले परहेज महत्वपूर्ण हैं .... रोगों की जड़ें छिपाने-गहरी करने के लिये नहीं बल्कि रोगों की जड़ों को उखाड़ने के लिये उन्हें उजागर करने के वास्ते। (जारी)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

खतों से - पत्रों से

✱ इन हवस की मंडियों में देखिये चारों तरफ
लड़खड़ाता क्या नशे में चल रहा है आदमी
— चाँद "शेरी", कोटा (राजस्थान)

✱....पति डॉ. मानव ने गृह जनपद वाराणसी रहने के दौरान अपनी पत्र-पत्रिकाओं में "पोलियो ड्रॉप" के विरुद्ध प्रभावी प्रकाशन किया था। उन पे बैन लगा। लम्बी सी.आई.डी. जाँच उपरान्त पिछले वर्ष केस फाइल हुई। अभी 5 माह पूर्व उनकी मेडिकल प्रैक्टिस प्रतिबंधित की गई। इस देश की व्यवस्था ही फासिज्म +शोषण की पर्याय बन गई है।....पारिवारिक आय पर ग्रहण लगने से अब "ज्योति" को जलाये रखना लगता है असंभव होगा। यतीम बच्चों के कल्याण के इस उपक्रम में बाहरी सज्जनों का सहयोग तो सहायक होता है.... फिलहाल तो जैसे-तैसे कार्य जारी रखी हूँ।... —नीलम, मेरठ (उ.प्र.)

✱ नदी थी, जल था
जल सूख गया
सूखी हुई नदी को रेत कहना
या सूखी रेत को नदी कहना
किसे नसीब कहना? —अक्षय, मुम्बई

✱.... मैं स्वयं 40 वर्ष तक मजदूर रह कर भारतीय जीवन बीमा निगम से 6 वर्ष पूर्व सेवानिवृत हुआ था।..... मेरा क्षेत्र है "भाषा"। मेरा मत है और अनुभव है कि भारत में अँग्रेजी देश के गरीबों, मजदूरों व सामान्य जनता के शोषण व अन्याय का बहुत बड़ा हथियार है।....
— जगदीश नारायण, वाराणसी

✱ कहने को तो हमारे देश के प्रत्येक प्राणी को समान अधिकार प्राप्त हैं। कानून की निगाह में सब बराबर हैं, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं— पर ये सब किताबी बातें हैं।....

समाज में मजदूर वर्ग के साथ-साथ मध्य वर्ग का भी शोषण हो रहा है। जगह-जगह पर बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ जहाँ अपने डिपार्टमेन्टल स्टोर खोल कर गरीब दुकानदारों को उजाड़ने पर तुली हुई हैं वहीं पर प्रत्येक कम्पनी में मजदूरों का शोषण हो रहा है। कई जगह पर मजदूरों की हाजरी नहीं लगाई जाती। बस दो नम्बर में ही वरकर को रख कर जब चाहें छुट्टी कर देते हैं...

पंजाब सरकार ने भी बड़ी कम्पनियों को रियायतें देने के लिये कई गाँवों की सैंकड़ों एकड़ जमीन सस्ते दामों पर एक्वायर कर ली है जिसे छुड़वाने के लिये सैंकड़ों किसान संघर्ष कर रहे हैं....

इसी तरह से कोलकाता में सिंगुर स्थान पर जबरी जमीन लेने की कोशिशें जारी हैं।....

ध्यान योग्य बात यह भी है कि मध्य वर्गीय किसान, दुकानदार अब मजदूर बन रहे हैं..... कुछ लोगों ने इस नये घट रहे घटनाक्रम से आँखें बन्द की हुई हैं, बिलकुल कबूतर की तरह, पर बिल्ली.... — जगदीश, मानसा (पंजाब)

✱ किस से करें शिकायत, हम क्या किस से बोलें
मन में जो दर्द छिपे हैं, किस से खोलें ?
— रामतीर्थ, दिल्ली

✱ जल संस्थान झाँसी, उ.प्र. में श्रम नियमों का पालन नहीं किया जाता है जबकि उपश्रम आयुक्त का कार्यालय भी झाँसी में ही है। सब से बुरी दशा पम्प चालकों की है। निरन्तर 8-12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी ली जाती है — लंच ब्रेक, ओवर टाइम, साप्ताहिक अवकाश नहीं दिये जाते। 40-45 दिन कार्य करने पर एक माह का वेतन दिया जाता है। यह हाल तो नियमित पम्प चालकों का है। पम्प संचालन के लिये जिन लोगों को ठेकेदार के जरिये रखा है उन्हें तो रोज 16 घण्टे ड्युटी करनी पड़ती है.... वेतन भी अधिकतम 1000 रुपये मासिक मिलता है, वह भी 6-6 माह बाद.... — कुछ पम्प चालक, कालपी

✱ श्रम के सीमेंट, पसीनें के जल ने
खड़े किये राजप्रासाद, भवन, अट्टालिकायें सलोने।
—रामचन्द्र "अमरेश", खरगोन (म.प्र.)

✱... आज का बचपन कैसा बनाया जा रहा है। किशोर, तरुण सभी को सुबह का सूरज देखने से गुरेज हो गया है। निशाचरी प्रवृति बढ रही है।.. एक महीने में मुम्बई में 80 महिलायें दुर्घटना, हत्या और साज़िश से मारी गई हैं।...— यदुनाथ, मुम्बई

✱ खड़े हर दिशा हत्यारे, किसको करें सलाम
सच की कर रहे हैं हत्या, झूठ के गुलाम।
— जगन्नाथ "विश्व", नागदा (म.प्र.)

✱... 1 फरवरी 2007 को मुम्बई महानगरपालिका का चुनाव... सभी राजनैतिक पार्टियों के उम्मीदवार एक बार फिर जनता को वही पुराने आश्वासन दे रहे हैं (....) कि वे नल, संडास, पानी, गटर इत्यादि का काम करेंगे। परन्तु चुनाव जीत जाने के बाद इन सब किये वादों को वे बाजू में रख देते हैं। टैक्स के रूप में जनता द्वारा माचिस से ले कर बस भाड़े पर लिये गये पैसे से ही सरकार और म्युनिसीपालिटी का बजट बनता है.....

26 जुलाई 2005 की बाढ और जान-माल के नुकसान के लिये मुम्बई महानगरपालिका ही जिम्मेदार है। बाढ के समय लोगों ने एक-दूसरे की मदद की जबकि सभी सरकारी संस्थायें पूरी तरह ठप्प पड़ गई थी। बाढ के बाद सरकार तथा राजनैतिक दलों ने जनता पर मेहरबानी समझ कर छुट-पुट राहत कार्य किया जिसमें बड़े पैमाने पर घोटाला हुआ।...

इसके विपरीत वासीनाका में इस्लामपुरा, मुकुंदनगर, इंदिरानगर के कुछ लोगों ने साथ आ कर खुद के बल पर राहत कार्य चलाया।.... लोगों का सक्रिय सहभाग होने के कारण इस राहत कार्य में भ्रष्टाचार का नामोनिशान नहीं था।

.....राज्यकर्ताओं की जन-विरोधी नीतियों के दुष्परिणाम हम हमारी जिंदगी के हर पहलू में भुगत रहे हैं।.... वासीनाका इलाके में बिजली, तेल, केमिकल्स के कारखाने हैं। इन में केलिको कम्पनी पिछले 22 साल से बन्द पड़ी है मगर मजदूरों को अभी तक उनकी सर्विस का हिसाब नहीं मिला है। एच.पी.सी.एल., बी.पी.सी.एल., टाटा पावर जैसी कम्पनियों में कायम काम होते हुये भी सालों-साल हजारों मजदूरों से ठेकेदारी पद्धति में काम लिया जाता है।....

.... हम रहिवासियों ने अपनी जिंदगी की कमाई डाल कर खाड़ी जैसी जमीनों को पाट कर अपने घर बनाये हैं। लेकिन महाराष्ट्र सरकार बद से बदतर आवास नीतियाँ बना कर हमें शहर से भगाने पर तुली है।

.....अब जो "नई आवास नीति" बनी है उसमें सरकार और उद्योगपतियों का इरादा साफ जाहिर है कि वे मेहनत करने वालों को मुम्बई से बाहर भगाना चाहते हैं।..... मुम्बई शहर से बाहर 30 से 50 किलोमीटर दूर.....

शहर से दूर हटाये जाने के कारण हमारा काम पर आने-जाने का खर्च बड़े पैमाने पर बढेगा। साथ ही आने-जाने में ज्यादा समय भी लगेगा। घटते पगार व बढती महँगाई के कारण हमारे परिवार और भी तबाह हो जायेंगे।.....

इसी तरह पूरे देश में लोगों की जमीनें हड़प ली जा रही हैं। शहरों में "नई आवास नीति" के नाम से तो गाँवों में "विशेष आर्थिक क्षेत्र" के नाम से उद्योगपतियों द्वारा लाखों किसानों की उपजाऊ जमीनें छीनी जा रही हैं।.....— शहीद दलवी-खाने यादगार केन्द्र, सहयाद्री चाल, इंदिरानगर, वासीनाका, चेम्बूर, मुम्बई-400074

✱ उदासी के मंडराये बादल, चिन्ता की बौछार
श्रमिक के घर ना ठहरी समृद्धि की बयार।
दिल में धधके आग, आँखों में बसी है प्यास
बार-बार के शोषण से श्रमिक हुआ उदास।
—नन्दलालराम भारती, इन्दौर (म.प्र.)

✱ दिल्ली के ओखला क्षेत्र में बसी हुई संजय कॉलोनी में कई महीनों से सुलभ शौचालय बन्द पड़ा है। वहाँ की महिलायें शौच के लिये दिन में या रात में जब जंगल जाती हैं तो उनके साथ बड़ी घिनौनी हरकतें होती हैं।.... महिलाओं ने अगस्त महीने में एक मीटिंग की... संजय कॉलोनी निवासी संघर्ष समिति से... केन्द्रीय सचिवालय, दिल्ली नगर पालिका और स्थानीय निगम पार्षद व विधायक को भी माँग पत्र दिया गया..... कहीं से भी कोई जवाब नहीं मिला।

फिर से महिलाओं की एक मीटिंग.... 20-25 पुरुष और महिलायें बदरपुर क्षेत्र के विधायक रामवीर सिंह बिधुड़ी के पास गये। पर उस नेता ने उन सभी पुरुष और महिलाओं को यह कह कर भगा दिया कि जहाँ जाना है, जिसके पास जाना है तुम जाओ, मैं इसमें कुछ नहीं करूँगा। साथ ही साथ जो शौचालय को खुलवाने के लिये माँग पत्र ले कर हम लोग वहाँ गये थे उसको भी उस नेता ने फाड़ कर फेंक दिया.....

.....ये कैसी व्यवस्था है जिसमें माँ-बेटियों को शौच के लिये डर-डर कर जाना पड़ता है ?

— मीरा का "मजदूर एकता लहर" के 16-28 फरवरी 07 अंक में पत्र (श्री चन्द्रभान, ई-392 संजय कॉलोनी, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020)

✱ तुम क्षितिज को
छूने का प्रयास भर करो
तुम चलोगे तो
कारवाँ स्वयम् बन जायेगा।
— नरेन्द्र नाथ, ग्वालियर (म.प्र.)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ● हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 06 से 2484 रुपये 28 पैसे है, 8 घण्टे काम के लिये 95 रुपये 55 पैसे। जनवरी 07 से देय डी. ए. मार्च के आरम्भ तक हरियाणा सरकार ने घोषित नहीं किया था। मुख्य मंत्री की 3510 रुपये न्यूनतम वेतन की घोषणा के बारे में श्रम विभाग कहता है कि कोई सूचना सरकार से नहीं आई है।

एस्सार स्टील मजदूर : "प्लॉट 10 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। हैल्परों की तनखा 1950 रुपये और ऑपरेटरों की 3500-4000 रुपये। ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सी एम आई वरकर : "प्लॉट 71 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर की तनखा आज 17 फरवरी को दिये जाने की सम्भावना है। उत्पादन का जोर है – स्थाई मजदूरों को 16 घण्टे भी रोक लेते हैं, ठेकेदार के जरिये रखे वरकर तो 32-40 घण्टे लगातार जोते जाने पर बीमार पड़ जाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

महावीर डाइकास्टर्स मजदूर : "प्लॉट 153 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2000 रुपये।"

गैलेक्सी इन्स्ट्रुमेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 2 सैक्टर-27सी स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को महीने के 2100 रुपये। फैक्ट्री में सुबह 8 से साँय 5½ बजे तक की शिफ्ट है। रोज 9½ घण्टे की ड्युटी है पर ओवर टाइम के पैसे स्थाई मजदूरों को भी नहीं देते।"

इनोटेक इंजिनियर्स मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ पर गुरुकुल स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 10½ बजे तक की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से।"

दलाल ऑटो वरकर : "प्लॉट 262 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

जे बी एम मजदूर : "प्लॉट 133 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर 10 प्रतिशत से भी कम हैं, 90 प्रतिशत से ज्यादा वरकरों को तीन ठेकेदारों के जरिये रखते हैं। जो 50-60 स्थाई मजदूर हैं उनकी 8½-8½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं। फाइलिंग, स्पॉट वैल्डिंग, सफाई, पैकिंग विभागों में 200 मजदूर एक शिफ्ट में काम करते हैं – सुबह 7½ से रात 9 बजे, रात के 10 और 1 भी बज जाते हैं। प्रेस शॉप के 300 और एक्सल विभाग के 150 वरकर 2 शिफ्टों में काम करते हैं – सुबह 7½ से रात 7 बजे तक और रात 8 बजे से अगले रोज सुबह 6 बजे तक। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। जे बी एम में आयशर, मारुति, हीरो होण्डा का काम होता है।"

संगीता इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 55 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2150 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा में 4-5 दिहाड़ियों की गड़बड़ी कर देते हैं। कह देते हैं कि तनखा कम्पनी की सैक्टर-24 वाली फैक्ट्री से बन कर आती है, हम क्या करें। धमका भी देते हैं पर जो बार-बार पूछते उन्हें पैसे दे देते हैं।"

वीनस मैटल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 262 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 600 मजदूरों में 10 प्रतिशत स्थाई, 10 प्रतिशत कैजुअल और 80 प्रतिशत को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है। प्रेस शॉप, पेन्ट शॉप और टूल रूम में दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम बहुत कम। वैल्डिंग, असेम्बली और पैकिंग विभागों में एक शिफ्ट है – सुबह 8½ से रात 9 बजे तक। एक कप चाय तक नहीं देते 12½ घण्टे में। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में जगह बहुत-ही कम पड़ती है। पेन्ट शॉप तक में एग्जास्ट फैन नहीं है – पँखा लगाने के लिये जगह ही नहीं है। पेन्ट शॉप की गर्मी प्रेस शॉप में भी आती है और गर्मियों में तो हालत बहुत खराब हो जाती है। कैन्टीन नहीं है – भोजन करने के लिये बिलकुल जगह नहीं है। वीनस मैटल में मारुति, हीरो होण्डा आदि का काम होता है।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये मजदूरों को जनवरी की तनखा 21-22 फरवरी को दी। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को जनवरी का वेतन आज 24 फरवरी तक नहीं दिया है।"

हाइटेक मजदूर : "20/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं जिन 40 वरकरों को भर्ती किया है उनमें से 4-5 को ही ई. एस.आई. कार्ड दिये हैं। छह ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी. एफ. नहीं। जाँच वालों के आने पर फैक्ट्री से बाहर कर देते हैं। हैल्परों की तनखा 2000 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। महीने में 100 से 500 रुपये की गड़बड़ भी करते हैं। नौकरी छोड़ने पर बकाया पैसे मुश्किल ही देते हैं। ठेकेदार हाथापाई भी कर लेते हैं और तनखा देरी से देते हैं – जनवरी का वेतन 19 फरवरी को दिया।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "स्थाई मजदूरों को कम्पनी ने दिवाली पर बोनस दे दिया लेकिन कैजुअल वरकरों को आधी फरवरी बीत जाने पर भी नहीं दिया है। छोटे-से नुक्स, थोड़े-से नुकसान पर कैजुअल वरकर को फैक्ट्री से निकाल देते हैं। और....और कैजुअल वरकर के तौर पर भर्ती के लिये कम्पनी अधिकारी 500 रुपये रिश्वत लेते हैं।"

वैभव इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 63 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 8 स्थाई और 120 कैजुअल वरकर हैं। कैजुअलों में हैल्परों की तनखा 1650 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एस पी एल वरकर : "प्लॉट 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 12 घण्टे के 90 से 115 रुपये देते हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और जनवरी के पैसे 22 फरवरी को जा कर दिये।"

क्लच ऑटो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में काम करते हम 500 कैजुअल वरकरों को जनवरी की तनखा आज 20 फरवरी तक नहीं दी है।"

ओरियन्ट फैन वरकर : "प्लॉट 59 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की टूल रूम एण्ड प्रेस शॉप फैक्ट्री में 14 फरवरी को मैनेजर व सुपरवाइजर ने मिल कर दो कैजुअल वरकरों की पिटाई की।"

युनीक इंजिनियरिंग मजदूर : "20/3 मथुरा रोड़ पर नोरदर्न कम्पलैक्स में प्लॉट 6/5 में स्थित फैक्ट्री में मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

दिल्ली से –

ऋचा ग्रोवेल एक्सपोर्ट मजदूर : "एक्स-62 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की 8 घण्टे की दिहाड़ी 105 रुपये और ऑपरेटर की 125 रुपये। साप्ताहिक छुट्टी नहीं; कोई सरकारी छुट्टी नहीं। फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात 9 बजे तक काम – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस. आई. व पी.एफ. 25-30 की ही हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद–121001

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2007 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

कारखाना और थाना

एम. जी. एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 108 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में स्टील व अल्युमिनियम का रसोई का तथा सजावटी सामान निर्यात के लिये बनता है।

"फैक्ट्री में 67 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन में 20 स्टाफ के हैं तथा बाकी स्थाई मजदूर। इस समय कम हैं पर फिर भी 235 कैजुअल वरकर हैं। दो-ढाई साल से लगातार काम कर रहे भी कैजुअल हैं और किसी भी कैजुअल वरकर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।

"एम. जी. एक्सपोर्ट में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर ... पर एक दिन छोड़ कर, यानी, तीसरे दिन दिन-रात काम करना पड़ता है – सुबह 8 बजे आरम्भ हुई ड्युटी दूसरे दिन साँय 4½ बजे खत्म होती है। लगातार 36½ घण्टे काम करना पड़ता है। ड्युटी के समय के बारे में कम्पनी स्थाई मजदूरों और कैजुअल वरकरों में कोई फर्क नहीं करती। और, स्थाई हों चाहे कैजुअल, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।

"रविवार को फैक्ट्री बन्द दिखाते हैं पर सुबह 7 से साँय 3½ बजे तक फैक्ट्री में उत्पादन होता है। रविवार को मजदूरों की साइकिलें फैक्ट्री के अन्दर रखवाते हैं.... एम. जी. एक्सपोर्ट कम्पनी सैक्टर-24 में ही बन्द दिखा रखी तीन फैक्ट्रियों में रात को काम करवाती है। प्लॉट 108 से प्लॉट 305, 329,.... में रात को मजदूर भेजे जाते हैं। उत्पादन छिपाने के लिये असली-नकली कागजात की भरमार रहती है.... निर्यात के लिये माल पहले यहाँ फरीदाबाद में सैक्टर-59 भेजा जाता था, अब उत्तर प्रदेश में दादरी भेजते हैं।

"एम. जी. एक्सपोर्ट में हैल्पर की तनखा 1900 रुपये और ऑपरेटर की 2300 रुपये है। वेतन देते समय मज़दूरों और स्टाफ वालों से कच्चे कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं। तनखा देने के दो-तीन दिन बाद पक्के रजिस्टर में दस्तखत करवाते हैं जहाँ 2485 रुपये आदि हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दर्ज रहता है। ओवर टाइम का विवरण कच्चे कागजों में ही रहता है।

"इधर 15 फरवरी को एम.जी. एक्सपोर्ट का चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर दोपहर 1 से साँय 4 बजे तक फैक्ट्री के दौरे पर था। इस दौरान इन साहब ने एक पावर प्रेस ऑपरेटर को मामूली-सी गलती पर पीटना शुरू कर दिया। सब मजदूरों के सामने बड़े साहब के थप्पड़-मुक्के-लात.... 15 फरवरी को सुबह 8 बजे काम शुरू करने वालों को 16 फरवरी साँय 4½ तक काम करना था। प्रेस ऑपरेटर 15 फरवरी को ही रात 8 बजे फैक्ट्री से चले गये। फैक्ट्री में 12 पावर प्रेस हैं और यह रात 8 से 9½ बजे तक बन्द रही। मैनेजमेन्ट दूसरी शिफ्ट के प्रेस ऑपरेटरों को कमरों से बुला कर लाई – 15 फरवरी की रात को 3 पावर प्रेस ही चली।

"16 फरवरी को सुबह 8 बजे प्रेस ऑपरेटर एम.जी. एक्सपोर्ट फैक्ट्री में जाने की बजाय पास के चौक पर एकत्र हुये। हैंड फौरमैन वहाँ गया और 9½ बजे मजदूरों को फैक्ट्री ले आया। प्रेस ऑपरेटर काम में लग गये। तीन घण्टे बाद कम्पनी ने फैक्ट्री में पुलिस बुलाई। दो पुलिसवाले प्रेस शॉप से 4 मज़दूरों को मुजेसर थाने ले गये। थाने से दो मजदूरों को वापस फैक्ट्री भेज दिया और दो को कहा कि तुम पर चोरी का आरोप है.... जो दो पुलिसवाले फैक्ट्री आये थे वे खुद ही 12 कटोरे साथ ले कर थाने गये थे! जिन दो मजदूरों को थाने में रोका था उन में एक वह था जिसकी बड़े साहब ने पिटाई की थी और दूसरा उसका दोस्त। मुजेसर थाने में डरा-धमका कर पुलिस ने शाम तक उन मजदूरों से इस्तीफे लिखवा कर कम्पनी से उनका हिसाब करवाया.... पुलिसवालों ने हिसाब में से भी 500-500 रुपये उन मजदूरों से ले लिये।"

मथ-मथ मन्थन

(गुड़गाँव से एक मित्र ने "अक्षर पर्व" पत्रिका को भेजे श्री किशन लाल, ग्राम-पोस्ट देमार, जिला धमतरी, छत्तीसगढ के पत्र की प्रति हमें भेजी है जिसके अंश हम यहाँ दे रहे हैं।)

..... मैं बेहद मामूली-सा पाठक हूँ। तीस-पैंतीस रुपये की मजदूरी में परिवार चलाता हूँ। यह मजदूरी भी रोज-रोज नहीं मिलती। अतः पत्र-पत्रिकायें खरीद कर नहीं पढ पाता। माँग कर पढता हूँ।.....

आप किस तरह के जन आंदोलनों में किस तरह के साहित्यकारों की सहभागिता चाहते हैं ? यहाँ तरह-तरह के साहित्यकार हैं – वामपंथी विचारधारा वाले भी, दक्षिणपंथी विचारधारा वाले भी, तीसरे विचारहीन साहित्यकार भी जिनका एकमात्र वाद या पंथ है सत्ता के करीब रह कर उसका भरपूर फायदा उठाना। आज वामपंथी विचारधारा वाले साहित्यकार आम आदमी की बात भिलाई होटल के बहुद्देशीय सभागार में करते हैं। पानी की तरह व्हिसकी का दौर चलता है बीच-बीच में। ये साहित्यकार जब जन आंदोलन से जुड़ेंगे तब क्या हश्र होगा आप समझ सकते हैं। दक्षिणपंथी साहित्यकार जन आंदोलन से जुड़ेंगे तो देश की कोई भी मस्जिद सुरक्षित नहीं रहेगी।....

जब लोग दो वक्त की रोटी के मोहताज हैं। रहने के लिये घर न हों। रेल पटरी के किनारे सुअरों के साथ रहने के लिये अभिशप्त हों। गटर का पानी पीने को मजबूर हों। गाँव के गाँव पलायन कर रहे हों। ऐसी स्थिति में शहर-सौंदर्यीकरण की बात बेमानी है।....

....जब आरक्षण है तब तो अनुसूचित जाति, जनजाति तथा पिछड़े वर्ग की यह स्थिति है। यदि आरक्षण नहीं होता तब क्या स्थिति होती। मैं यहाँ दूसरी बात कहना चाहता हूँ।.... .....छत्तीसगढ में मोटे तौर पर अनुसूचित जाति के अंतर्गत सतनामी, मोची, गांड़ा, महार, नगारची; जनजाति वर्ग में गोंड़, कोरी, मुरिया, माड़िया तथा अन्य पिछड़ा वर्ग में तेली, कलार, मरार, कुम्हार, लोहार, कुर्मी इत्यादि जाति के लोग हैं। इन तमाम जातियों में मोची ऐसी जाति है जिसे सब छुआछूत की दृष्टि से देखते हैं। ... केवल सतनामी जाति ही मोची जाति के करीब है। लेकिन सतनामी.....भी खुल कर मोची के घर खाना खाने से हिचकते हैं।.... सतनामी जाति के लिये "चमरा" जैसे अपमानजनक शब्द का प्रयोग करते हैं।

अब इनकी आर्थिक स्थिति पर गौर करें – इन सभी जातियों में अमीर वर्ग भी हैं और गरीब वर्ग भी हैं। यहाँ अमीरी और गरीबी का मेरा पैमाना आप लोगों से बिलकुल भिन्न है। यहाँ अमीरी से मेरा अभिप्राय सरकारी नौकरी पेशा, व्यवसायी या चार-पाँच एकड़ या इससे अधिक भूमि वाले तथा गरीबी से मेरा आशय भूमिहीन मजदूर वर्ग से है। तो आरक्षण का लाभ इन तथाकथित अमीरों को मिलता है, गरीबों को नहीं। मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा –

मैं सतनामी जाति का हूँ। .... सन् 1995 में हिन्दी साहित्य में एम.ए. तथा 1998 में बी.एड. करने के बाद शिक्षक बनने के लिये इधर-उधर बहुत हाथ-पाँव मारा। केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय से ले कर शिक्षा कर्मी, संविदा शिक्षक, सब के लिये प्रयास किया लेकिन मुझे नौकरी नहीं मिली। कारण, मेरे पास रिश्वत देने के लिये एक-डेढ लाख रुपये नहीं थे।.... मुझे नौकरी नहीं मिली जबकि मेरे गाँव के तीन स्वजातीय भाइयों को, जिन्होंने रिश्वत दी तथा वे मात्र बारहवीं पास हैं, नौकरी मिल गई। मैंने स्वरोजगार के लिये भी प्रयास किया किन्तु असफल रहा। अतः हताश हो कर अपनी तमाम डिग्री (पाँचवी से ले कर एम.ए. तक) जिलाधीश धमतरी को सौंप दी और अपने आप को अनपढ घोषित कर दिया।

उपरोक्त उदाहरण से मैं केवल यही कहना चाहता हूँ कि आरक्षण का लाभ उन्हीं लोगों को मिल रहा है जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं। मैं दरअसल कहना चाहता हूँ कि हम गरीबों को नौकरी में आरक्षण मत दो लेकिन रोजी रोटी के अवसर प्रदान करो।

.... इस एक अरब की आबादी वाले देश के सत्तर फीसदी लोगों की मासिक आय 700-800 (सात-आठ सौ) रुपये है।... मैं महीने में आठ-नौ सौ रुपये खेतों में (दूसरों के) काम करके पाता हूँ। महीने के चार-पाँच दिन ही सब्जी पकती है, बाकी के चौबीस-पच्चीस दिन नमक-मिर्च के साथ भात-बासी खाते हैं।

जहाँ तक नक्सलवाद का सवाल है।.... कुछ भी कीजिये लेकिन सलवा जुडूम को बंद कर निरपराध आदिवासियों को मरने से बचाइये। सलवा जुडूम के नाम पर जितने भी शिविर लगाये गये हैं वे यातना शिविर हैं। वहाँ आदिवासियों को एक तरह से बंधक बना कर रखा गया है। महिलाओं के साथ बलात्कार कर रहे हैं पुलिस और अर्द्धसैनिक बल के जवान। नक्सलवादियों और पुलिस के संघर्ष में दोनों तरफ से सिर्फ और सिर्फ आदिवासी ही मारा जा रहा है।.....

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73